सच कहने की ताकत

# जालंधर ब्रीज

साप्ताहिक समाचार पत्र

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY • YEAR-1 • 31 DECEMBER 2019 TO 6 JANUARY 2020 • VOLUME-19 • PAGES- 4 • RATE- 3/- • www.jalandharbreeze.com • RNI NO.:PUNHIN/2019/77863

**सफलता की कुंजी**

संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका हैं। असंभव से भी आगे निकल जाना।

–स्वामी विवेकानंद

**अनमोल विचार**

यदि आप प्रयास करने के बाद भी असफल हो जाएं तो भी उस व्यक्ति से हर हाल में बेहतर होंगे जिसको बिना किसी प्रयास के सफलता मिल गई हो

–चाणक्य

## हाईवे को कब मिलेगा आवारा पशुओं से छूटकारा

# सड़कों पर पशुओं और इंसानों की अनचाही मौत के लिये कौन जिम्मेवार ?

■ जालंधर से प्रभात सूरी की विशेष रिपोर्ट

भारत की संस्कृति में गाय को माता का दर्जा प्राप्त है परन्तु इसकी जब रखरखाव की बारी आती है सरकारें इसमें पूरी तरह से विफल है। गाय की रक्षा के लिए हमने काऊ सैस भी लगा दिया इसके लिये हमने कमिश्न बना कर अपने आप को सच्चे गाय भक्त कहने वाले को चेयरमैनीयां भी दे दी परन्तु इन पदों पर आसीन हो कर इनको अपने निजी हित नज़र आने लग जाते है और इसकी पूर्ती के लिये अपनी जिम्मेवारी को भूल बैठते है। यह तो हमारे शहरों के बाजारों यां गलीयों में इनके ऊपर हो रहे अत्याचार की कहानी है परन्तु इससे भी गंभीर समस्या प्रमुख राजमार्गों पर इनके द्वारा दिन या रात में सड़क करोंसिंग करना या रात के अंधेरे में सड़क के बीच में बैठ जाना हादसों का बहुत बड़ा कारण बन रहे है जिस में कि कई परिवारों के अन्नदाता इस दुनियां को अलविदा कह चुके है। जिसके लिये भ्रष्ट पैट्रोलीग अफसर जो अपनी डयूटी बखूबी से नहीं निभाते जिसके लिये वो लोगों से टोल टैक्स की वसूली करते है यह नैशनल हाईवे के अफसरों की जिम्मेवारी है कि रोड़ पर जा रहे यात्रीयों को किसी भी जानवर से किसी प्रकार की दुविधा ना हो सके इसके लिये प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्गो पर गरिल्लें और इन की देखरेख के लिये अफसरों द्वारा इस पर पैनी नजर बना के रखनी पड़ेगी।

राज्य की सरकारों द्वारा कई बार केन्द्र सरकार को लिखे जा चुके कई पत्र जिसमें की उसने पूरी विस्तार से गऊ माता की पहचान के लिये विस्तार से जो जानकारी मांगी गई है उसको मुहैया करवाये ताकि राज्य की सरकारें किसी भी रोड़ एक्सीडैंट की रोकथाम के लिये अगर कोई भी कदम उठाती है तो इससे किसी भी धार्मिक भावना को ठेस ना पहुंचे। अगर किसी की मृत्यु प्रमुख राजमार्गों पर जानवर के साथ गाड़ी टकराने के कारण होती है तो उस पीड़ित परिवार को विभाग और ठेका प्राप्त कंपनी से मुआवजे की मांग करनी चाहीये अगर उनके द्वारा मुआवजा देने से इंनकार किया जाता है तो वह वकीलों की मदद से सीधा कोर्ट की शरण में जा सकते हैं।

# जालंधर के पूर्व मेयर के करीबी ठेकेदारों का गठजोड़ मौजूदा वित्त और ठेका कमेटी ने तोड़ा

■ जालंधर से नीरज की विशेष रिपोर्ट

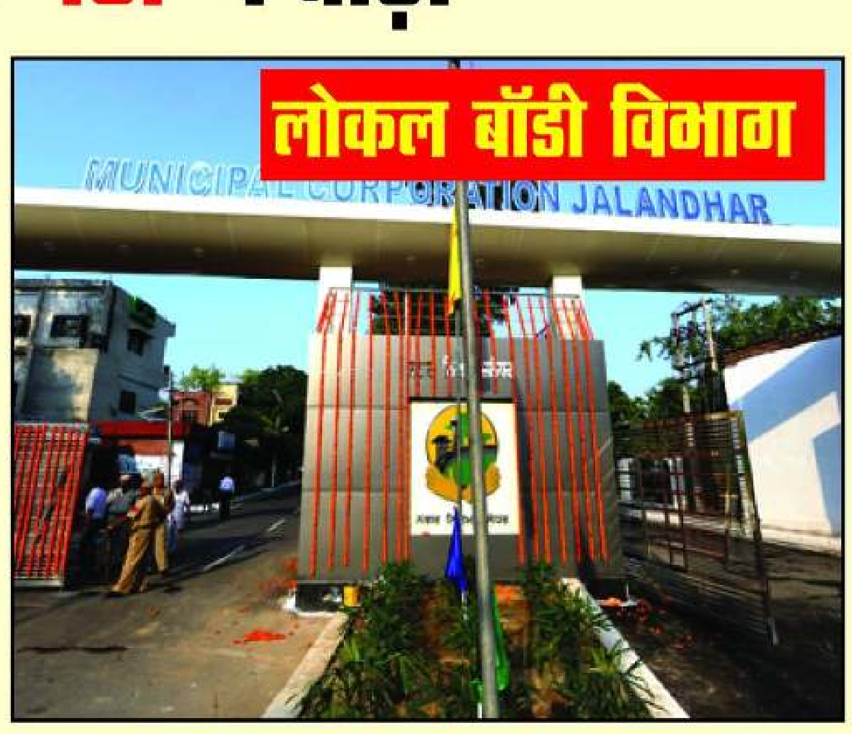


अकाली–भाजपा सरकार में रहे पूर्व मेयर अक्सर विवादों में रहे चाहे वो अपनी सहयोगी पार्टी के पूर्व सीनियर डिप्टी मेयर के साथ मतभेद मनभेद और दोनों के कारण और कई अनेकों कारण जैसे कि अवैध बिल्डिंगों में अपने बचपन के दोस्त विधायक के साथ शमुलियत चाहे टैंडरिंग प्रक्रिया में अपनी मनमर्जी दिखा कर अपने चहेते को ठेके दिलवाने में इसी का एक उदाहरण के रूप में स्ट्रीट लाईट के रखरखाव के ठेके काफी विवादों में रहे। अकाली भाजपा कार्यकाल के दौरान जितने भी स्ट्रीट लाईट के रखरखाव के ठेके विभाग के अफसरों द्वारा लगाये जाते थे उसमें इस पूर्व मेयर द्वारा अपने चहेते को ठेके दिलाने के लिये अपने हिसाब से ही बंद कमरों में बैठ कर नियम और शर्तें बताता ताकि बाहर से कोई भी ठेकेदार टैंडर भर के ठेका ना प्राप्त कर ले। जिसकी शिकायत कई ठेकेदारों द्वारा मुख्य मंत्री से लेकर डीजीपी विजीलैंस तक की जाती रही जिसके परिणामस्वरूप सरकार द्वारा अफसरों को वार्निंग देकर चेताया गया कि भविष्य में अफसर दोबारा गलती ना करें परन्तु इसके बावजूद पूर्व मेयर द्वारा इसका तोड़ निकालते हुये प्रधानमंत्री मोदी द्वारा एनर्जी एफीसीयंसी के तहत देश के हर बड़े शहरों को पुरानी लाईटें उतरवाकर नई लाईटें लगाने के लिये आग्रह किया परन्तु पूर्व मेयर इतना चलाक था कि इसने इस प्रोजैकट के टैंडर लगाने से लेकर उसे सरकार से पास करवाने तक हर नियम को तार– तार किया और पूर्व मंत्री अपने विधायक दोस्त के साथ मिलकर अपने चहेते को ठेका दिलवाने के लिये झूठे ज्वांइट वैंचर झूठा तजुर्बा दिखाकर अपनी ताकत का इस्तेमाल करते हुये अफसरों से ऐसे गलत काम करवाए जिसका हर्जाना अफसरों को कांग्रस की सरकार में बदनामी का शिकार हो कर उठाना पड़ा जिसमें एक पार्षद द्वारा हवा में चलाया गया तीर था परन्तु कांग्रस के ही पूर्व निकाय मंत्री और शहर के कुछ बुद्धीजीवी व्यक्तियों की मदद से सीधा लग गया और इस मुद्दे की गंभीरता को देखते हुए पूर्व निकाय मंत्री द्वारा इसको रद कर दिया गया। इसका सारा श्रेय लेने में पार्षद लगा रहता था परन्तु यह पार्षद अपनी ही पार्टी के नेता को रास नहीं आ रहा है क्योंकि इसको पार्टी से ज्यादा अपनी वाहवाही में मज़ा आता है इसी मुद्दे का कड़ा संज्ञान शहर के एक आरटीआई एक्टीविस्ट सिमरनजीत सिंह द्वारा लिया गया। जिसमें कि उसने इस प्रोजैक्ट को पास करवाने वाले कमिश्नर सुपरिडैंट इंजीनियर और पूर्व मेयर की शिकायत डायरेक्टर विजिलैंस से की और राज्य को वित्तीय नुकसान पहुंचाने के लिये इन राजनेताओं और अधिकारियों की जांच कर कारवाई की मांग की जिसके परिणामस्वरूप डायरेक्टर विजिलैंस ऑफिस में उसके द्वारा ब्यान दर्ज करवा दिये गये हैं और आगे की जांच के लिये विजिलैंस विभाग ने सैक्ट्री लोकल गवर्नमेंट से जांच करने के लिये कहा और इसकी रिपोर्ट आरटीआई एक्टीविस्ट द्वारा चंद ही दिनों में आरटीआई द्वारा वसूल कर ली जायेगी। इसी चीज को दुबारा ध्यान में रखते हुये वित्त और ठेका कमेटी इस बार नगर निगम द्वारा रखरखाव के लिये लगाये गये टैंडरों में कम सेविंग का कारण पूल होना बता कर इस नैक्सस (गठजोड़) को आगे बढ़ने से रोका ताकि कोई विरोधी या अपनी ही पार्टी का कोई पार्षद कमेटी पर संदेह प्रकट ना करे।

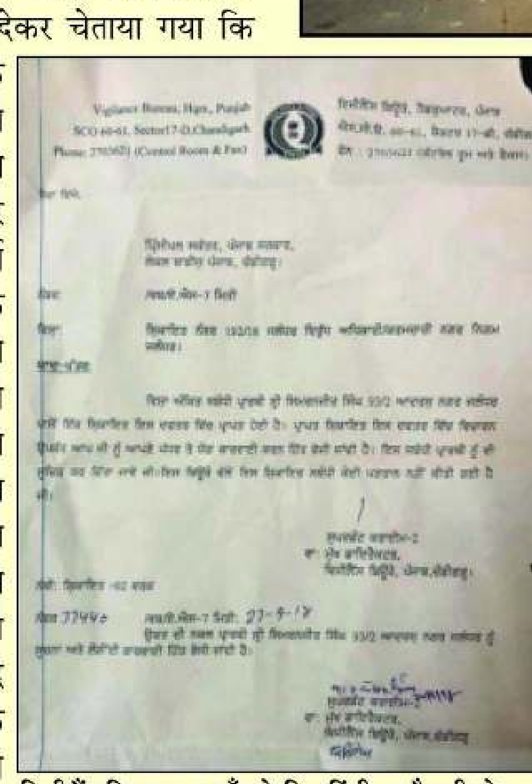

Vigilance Bureau, Hqrs., Punjab

विजीलैंस विभाग द्वारा जाँच के लिए प्रिंसीपल सैक्टरी लोकल गवर्नमेंट को जारी किया गया पत्र।

**नववर्ष की शुभकामनाएं**

**जालंधर ब्रीज**

के समूह परिवार की ओर से नववर्ष की देशवासियों को शुभकामनाएं। नववर्ष सभी के लिए मंगलमय हो।

**समूह देशवासियों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं**

Lic No : 933/ALC-4/LA/FN:1184

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE
CONSULTING | DESIGN | TRAINING

**INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE**

ISO CERTIFIED 2015 COMPANY

**IELTS • PTE • TOEFL**
**SPOKEN ENGLISH**

TOURIST VISA | STUDY VISA | PR
WORK PERMIT | HOLIDAY PACKAGES

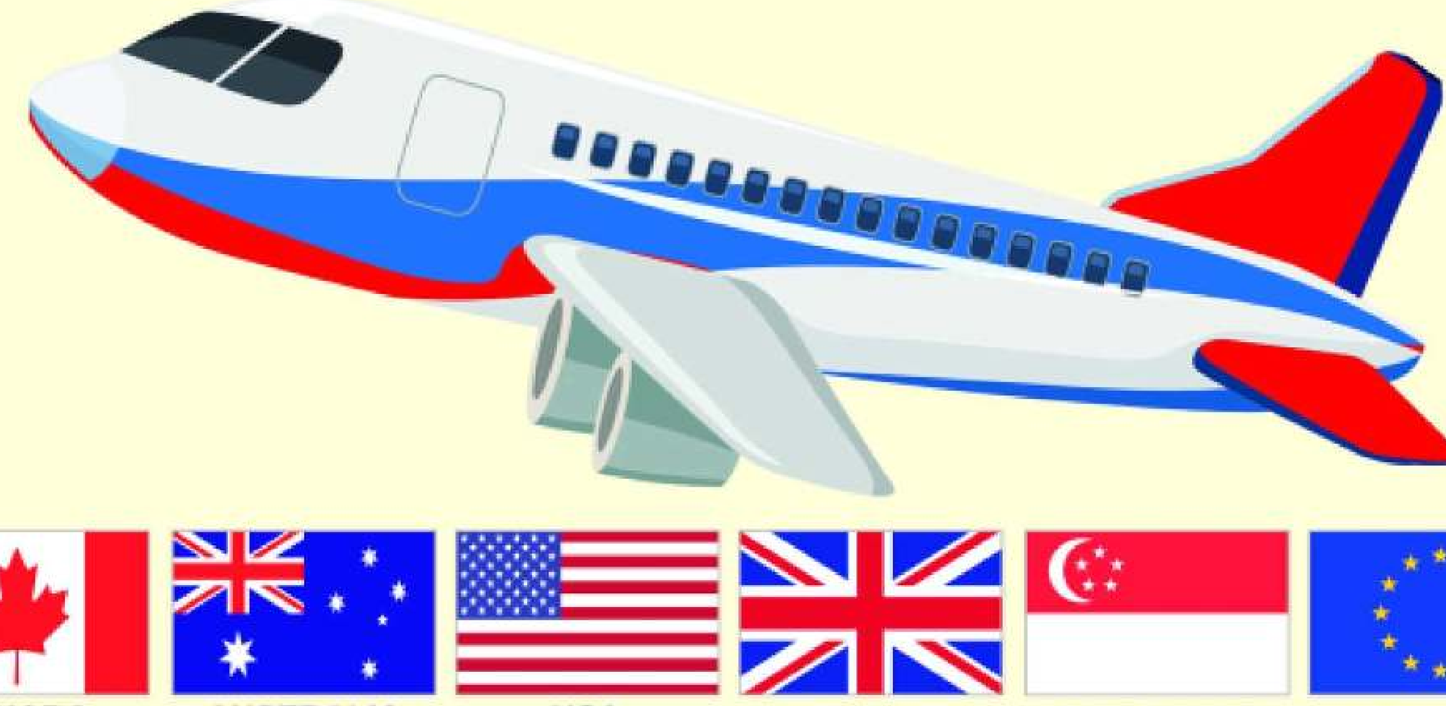

9988115054 • 9317776663

REGIONAL OFFICE : S.C.O No. 10, Gopal Nagar, Near Batra Palace, Jal.

HEAD OFFICE : S.C.O No. 21-22, Kuldip Lal Complex, Highway Plaza, GT Road, Adjoining Lovely Professional University, Phagwara.

E-mail : ankush@innovativetechin.com • hr@innovativetechin.com

Website : www.innovativetechin.com • FB/Innovativetechin

अंकित

> ईमानदारी से बड़ा कोई सद्‌गुण नहीं है। जो व्यक्ति अपने प्रति, अपने घर, परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति ईमानदार होता है, वह एक अनुकरणीय उदाहरण बन जाता है।
>
> ■ अब्राहम लिंकन

www.jalandharbreeze.com

साप्ताहिक
31 दिसंबर 2019 से 6 जनवरी 2020
जालंधर ब्रीज

## दखल

# तेज रोशनी दे रही कई समस्याएं

**पर्यावरण प्रदूषण की समस्या जिस तरह विकराल रूप धारण कर रही है, उससे लगता है कि कुछ सालों में विकासशील देशों में रहने वाले लोगों की औसत उम्र में और भी कमी आएगी। इससे अनिद्रा की समस्या बढ़ रही है। इसलिए लोग नींद के लिए दवाओं का सेवन करते हैं। अब इससे लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में जबर्दस्त कमी देखी जा रही है और लोगों की औसत आयु में कमी आ रही है।**

**वायु**, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और मृदा प्रदूषण से पैदा होने वाली समस्याओं से लोग वाकिफ हैं। इनके चलते होने वाली बीमारियां पहले ही चुनौती बनी हुई हैं। इनका असर खेती-किसानी से लेकर जन-जीवन पर पड़ रहा है। इसलिए इन प्रदूषणों को कम करने की कवायदें भी विश्व स्तर पर जारी हैं। मगर प्रकाश प्रदूषण से होने वाली समस्याओं के बारे में लोग नहीं जानते या इस तरफ अभी अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। शायद इसलिए कि दूसरे प्रदूषणों की तरह इस प्रदूषण के प्रभाव भयावह रूप नहीं ले पाए हैं। इसलिए इस खतरे के प्रति लोग आंख मूंदे हुए हैं। दक्षिण कोरिया स्थित सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी में एसोसिएट प्रोफेसर क्यॉग-बोक मिन के मुताबिक रात में बाहरी यानी आउटडोर व कृत्रिम प्रकाश की तीव्रता का नींद की दवाओं से गहरा रिश्ता है। अध्ययन के मुताबिक रात में घर के बाहर के तेज प्रकाश का असर नींद पर पड़ता है। इससे अनिद्रा की समस्या बढ़ रही है। इसलिए लोग नींद के लिए दवाओं का सेवन करते हैं। इससे लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में जबर्दस्त कमी देखी जा रही है और लोगों की औसत आयु में कमी आ रही है।

प्रकाश प्रदूषण एक ऐसी नई समस्या है, जिसका समाधान निकट भविष्य में संभव नहीं दिखाई देता, बल्कि इस समस्या के दिनोंदिन और बढ़ने के आसार हैं। इसकी वजह यह है कि लगातार नए-नए शहर बसाए जा रहे हैं। शहरों में सुरक्षा-व्यवस्था ठीक रहे, इसलिए सड़कों, पार्कों, व्यावसायिक परिसरों में ऊंचे खंभों पर तेज रोशनी वाली बत्तियां उपयोग की जाने लगी हैं। इसके अलावा जगह-जगह तेज चमक बिखेरने वाले होर्डिंगों और साइनबोर्डों का चलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। चकाचौंध कर देने वाली ये लाइटें सेहत पर किस तरह और कितना असर डाल रही हैं, इस पर नगरपालिका या सरकार को सोचने का वक्त नहीं है। आमतौर पर आम लोग इस बाबत सोचते ही नहीं हैं। बल्कि सड़कों और घरों के बाहर गलियों में अगर बत्तियां न हों, तो उसके लिए आंदोलन तक पर उतर आते हैं। लोगों को यह भी नहीं मालूम कि आंखों को चौंधिया देने वाली ये बत्तियां उनकी उम्र को कम करने की वजह बन रही हैं। लोगों के लिए तो पार्कों, गलियों और सड़कों पर बत्तियों का होना विकास का पैमाना है।

मगर इस तथाकथित विकास के पैमाने में उनकी जिंदगी का पैमाना गड़बड़ा रहा है, यह किसी को नहीं मालूम। यहां तक कि पढ़े-लिखे लोग भी तेज रोशनी को तरक्की का पर्याय मानते हैं। अनेक अध्ययनों से यह तथ्य बहुत पहले सामने आ चुका था कि शहरों, पर्यटन स्थलों, जंगल सफारी आदि में रात को जलने वाली तेज बत्तियों की वजह से वहां रहने वाले पक्षियों और दूसरे वन्य जीवों के स्वाभाविक जीवन चक्र पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। उनकी नींद में बाधा उत्पन्न होती है, इससे उनकी प्रजनन क्षमता घट रही है। इस वजह से अनेक पक्षियों और वन्य जीवों की प्रजातियां नष्ट हो रही हैं। मगर उन अध्ययनों के निष्कर्षों को बहुत गंभीरता से नहीं लिया गया। फिर यह सोचने की जरूरत नहीं समझी गई कि अगर वन्य जीवों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ रहा है, तो मनुष्य पर भी कुछ प्रभाव पड़ता होगा। मगर चकाचौंध को विकास का पर्याय मानने वाली व्यवस्थाओं ने इसे कोई गंभीर समस्या नहीं माना। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट के निदेशक और अर्थशास्त्री प्रो माइकल ग्रीनस्टोन के मुताबिक वैश्विक आबादी का पचास फीसद या 5.5 अरब लोग ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं, जहां प्रदूषण की समस्या डब्ल्यूएचओ द्वारा निर्धारित सीमा को पार कर गई है। गौरतलब है कि भारत और चीन में दुनिया की 36 प्रतिशत आबादी रहती है। दोनों देशों में वायु, ध्वनि, जल, मृदा और प्रकाश प्रदूषण की समस्या विकराल रूप ले चुकी है।

एक सर्वेक्षण के मुताबिक इन दोनों देशों में रहने वाले लोगों की औसत उम्र में 73 फीसद की कमी आई है। उड़ती धूल से जहां सिर दर्द, बुखार, नेत्ररोग, चर्मरोग, श्वांसरोग व एलर्जी जैसी समस्याएं विकट होती जा रही हैं, वहीं प्रकाश प्रदूषण के कारण अनिद्रा, नेत्ररोग, हृदयरोग और मानसिक रोग लगातार बढ़ते जा रहे हैं। जिस प्राकृतिक प्रकाश को जिंदगी का कभी सहचर माना जाता था, वह जब कृत्रिम रूप से हमारी जिंदगी का हिस्सा बनता है, तो हमारे लिए समस्या पैदा करने वाला बन जाता है, नए शोध और सर्वेक्षण तो यही कह रहे हैं। इसी तरह मृदा प्रदूषण से, जिसमें उड़ती धूल की समस्या सबसे ज्यादा है, सब्जियों, फलों, खाद्यान्न और दूसरी खेत में पैदा होने वाली वस्तुएं प्रदूषित हो रही हैं। ऐसी वस्तुओं के सेवन से पेट, मस्तिष्क, त्वचा, आंख, किडनी, लीवर पर अत्यंत घातक असर पड़ रहा है। असमय में समाज के हर आयु वर्ग का व्यक्ति बीमारी से ग्रस्त होने लगा है। कुछ साल पहले यह अध्ययन भी सामने आया था कि गंगा और यमुना जैसी नदियों के प्रदूषित होते जाने की वजह से उनके किनारे के गांवों में मृदा प्रदूषण तेजी से बढ़ा है और उसके चलते वहां कई तरह की बीमारियां खतरनाक स्तर तक बढ़ गई हैं।

वैज्ञानिकों के मुताबिक हवा में प्रदूषण व आर्द्रता बढ़ने से वातावरण में 2.5 पीएम के सूक्ष्म कण, ओजोन, नाइट्रेट, सल्फेट और कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा ज्यादा है। प्रदूषण और आर्द्रता से ग्राउंड लेबल पर ओजोन का स्तर बढ़ रहा है। इससे नाक और सांस की नलिकाओं में सूजन और संक्रमण की शिकायत बढ़ रही है जिससे लोग खांसते-खांसते परेशान हैं। प्रदूषण और आर्द्रता बढ़ने से फोटो केमिकल स्मॉग भी बन रहा है। विशेषज्ञों के मुताबिक फोटो केमिकल स्मॉग में निचली स्तह पर ओजोन की मात्रा लगातार बढ़ रही है। यह ओजोन नाक और सांस की नलिकाओं के म्यूकस (द्रव्य पदार्थ) को नुकसान पहुंचा रही है। इससे आम लोगों में सांस की नलिकाओं में सूजन और संक्रमण हो रहा है। प्रदूषण से अस्थमा और क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज से पीड़ित मरीजों की सांस उखड़ने लगी है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या जिस तरह विकराल रूप धारण कर रही है, उससे लगता है कि कुछ ही सालों में विकासशील देशों में रहने वाले लोगों की औसत उम्र में और भी कमी आएगी। आमतौर पर शहरों में रहने वालों को प्रदूषण की समस्या से दो-चार होना पड़ता है, लेकिन अब गांवों और छोटे कस्बों में भी प्रदूषण की समस्या से लोगों को तरह-तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

भारत के अनेक प्रदेशों के किसानों द्वारा पराली जलाने से वायु प्रदूषण, डीजे के शोर से ध्वनि प्रदूषण और उड़ती धूल के कणों से पर्यावरण पर प्रतिकूल असर देखने को मिल रहा है। यही वजह है कि गांवों में रहने वाले लोग उन बीमारियों की चपेट में आते जा रहे हैं, जो आमतौर पर शहरों की मानी जाती थीं। पराली जलाने से हवा और सेहत तो चौपट हो ही रही है, जमीन की उर्वरा-शक्ति में जबर्दस्त कमी देखी जा रही है। सर्वेक्षण के मुताबिक भूमि में 80 फीसद तक सल्फर, नाइट्रोजन और बीस फीसद अन्य पोषक तत्वों की कमी आई है।

इसके अलावा जमीन में मौजूद 'मित्रकीट' नष्ट हो रहे हैं। कीटों का प्रकोप गांवों में बहुत तेजी के साथ बढ़ रहा है और भूमि की जल धारण क्षमता में कमी आ रही है। इस पर गौर करने की जरूरत है। शहरों में घरों और कारखानों का कचरा और गांवों में पराली दोनों पर्यावरण की बर्बाद कर रहे हैं। प्रकाश प्रदूषण की बढ़ती समस्या पर काबू पाने के उपाय जरूरी हो गए हैं।

■ **अखिलेश आर्येंदु**
(वरिष्ठ पत्रकार)

## विचार

# चीन से निपटने की तैयारी

**चीन की पनडुब्बी हमेशा से भारत के लिए चिंता का कारण रही हैं। समुद्र में भारत ने अपनी ताकत में भले ही खूब इजाफा कर लिया हो, पर चीन को रोकने का रोडमैप अब तक नहीं बन पाया था। लेकिन चीन को नाकाम करने के लिए भारत ने कदम बढ़ा दिए हैं।**

अब यह छिपा नहीं है कि लंबे समय से चीन और पाक के नौसैनिक साथ काम कर रहे हैं। इसके अलावा चीन भारतीय क्षेत्र के आसपास वाले इलाकों में ऐसी कई पनडुब्बी भेज चुका है जो परमाणु हमला करने में सक्षम हैं। चीन की यह पनडुब्बी हमेशा से भारत के लिए चिंता का कारण रही हैं। समुद्र में भारत ने अपनी ताकत में भले ही खूब इजाफा कर लिया हो, मगर चीन की इस साजिश को रोकने का रोडमैप अब तक नहीं बन पाया था। लेकिन अब चीन की चालों को नाकाम करने के लिए भारत ने कदम बढ़ा दिए हैं। भारतीय नौसैनिकों ने अरिहंत क्लास एसएसबीएन के साथ मिलकर परमाणु हमले करने में सक्षम छह पनडुब्बी बनाने की योजना तैयार की है। हिंद महासागर में चीन की बढ़ती ताकत आने वाले समय में भारत के लिए चुनौती हो सकती है। ऐसे में भारत ने भी खुद को मजबूत करने की तैयारी तेज कर दी है। नौसेना पानी में परमाणु हमले करने वाली पनडुब्बी का बेड़ा तैयार करने जा रही है।

रक्षा संबंधी स्थायी समिति ने इस संबंध में शीतकालीन सत्र के दौरान संसद में रिपोर्ट जमा की थी, जिसके मुताबिक नौसेना 18 (पारंपरिक) व छह एसएसएन (परमाणु हमले में सक्षम) पनडुब्बियों के निर्माण की तैयारी कर रही है लेकिन नौसेना की मौजूदा ताकत 15 है और एक एसएसएन लीज पर उपलब्ध है। वर्तमान में भारतीय नौसेना के पास रूसी मूल की किलो क्लास, जर्मन मूल की एचडीडब्लू क्लास और पारंपरिक डोमेन में नवीनतम फ्रेंच स्कॉर्पीन क्लास की पनडुब्बियां हैं, जबकि परमाणु सेक्शन में भारत ने रूस से एक आईएनएस चक्र (अकुला क्लास) लीज पर ले रखा है। भारतीय नौसेना, प्रोजेक्ट 75 इंडिया के तहत छह नई पनडुब्बियों के निर्माण की योजना पर भी काम कर रही है। इसके तहत भारतीय नौसेना, विदेशी मूल की उपकरण निर्माताओं के साथ मिलकर छह पारंपरिक पनडुब्बी का निर्माण करेगी। सभी परियोजनाएं, रणनीतिक साझेदारी नीति के तहत शुरू होंगी। बता दें कि रूस ने भारत को सबसे पहले परमाणु पनडुब्बी जनवरी, 1988 में सोवियत संघ के जमाने में दी थी। उस समय शीत युद्ध के दौरान वह भारत का न सिर्फ रणनीतिक भागीदार था, बल्कि सैनिक उपकरणों का, विशेषकर भारतीय नौसेना के उपकरणों का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत भी था।

2015 में मोदी सरकार ने भारतीय नौसेना के लिए लंबित परियोजना को आगे बढ़ाते हुए छह परमाणु शक्ति चलित अटैक पनडुब्बियों के निर्माण को मंजूरी दी थी। इन पनडुब्बियों को नौसेना के डिजाइन निदेशालय में डिजाइन किया जाएगा और विशाखापत्तनम में शिप बिल्डिंग सेंटर में बनाया जाएगा। भारतीय नौसेना इस समय कुल 15 पनडुब्बियों का संचालन कर रही है जिसमें आईएनएस अरिहंत और आईएनएस चक्र परमाणु शक्ति संचालित हैं। अब भारत जिस दिशा में बढ़ रहा है, वह निश्चित तौर पर नौसेना की ताकत को बढ़ाएगा और चीन तथा पाक को हद में रहने को मजबूर करेगा।

# महिलाओं को देने होंगे ज्यादा मौके

**देश** के नीति निर्माता स्त्री-पुरुष के बीच असमानता को खत्म करने की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन जमीनी हकीकत क्या है, खुलासा वैश्विक स्त्री-पुरुष समानता सूचकांक की हाल ही में आई रिपोर्ट से होता है। इसमें भारत, दुनिया के 129 देशों में से 95वें पायदान पर है। यह सूचकांक गरीबी, स्वास्थ्य, शिक्षा, साक्षरता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और कार्यस्थल पर समानता जैसे पहलुओं का आकलन करता है। इस सूचकांक में हमारे पड़ोसी देश चीन को 74वां स्थान मिला है। वहीं भारतीय महाद्वीप के दीगर देश पाकिस्तान 113वें और बांग्लादेश 110वें पायदान पर है। पहले स्थान पर डेनमार्क है। रिपोर्ट से मालूम चलता है कि स्त्री-पुरुष के बीच समानता के मामले में हमारे यहां स्थिति सुधरने की बजाय और भी बदतर हुई है।

तमाम सरकारी, गैर सरकारी कोशिशों के बावजूद देश में स्त्री-पुरुष के बीच असमानता और भी बढ़ी है। स्त्री-पुरुष में असमानता की खाई को यूरोपीय देशों ने अपने यहां ज्यादा बेहतर तरीके से पाटा है। जबकि हमारे देश में स्त्री-पुरुष के बीच समानता की कोशिशें नाकाफी हैं। जिसके लिए सरकार को हर क्षेत्र में पहले से और भी ज्यादा काम करने होंगे। इस रिपोर्ट को ब्रिटेन की इक्विल मेजर्स 2030 ने तैयार की है। यह अफ्रीकन वुमेंस डेवलपमेंट एंड कम्युनिकेशन नेटवर्क, एशिया पैसेफिक रिसोर्स एंड रिसर्च सेंटर फॉर वुमेन, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, इंटरनेशनल वुमेन्स हेल्थ कोलिशन समेत क्षेत्रीय और वैश्विक संगठनों का एक संयुक्त प्रयास है। रिपोर्ट में खास तौर से यह देखने की कोशिश की जाती है कि दुनिया में लैंगिक समानता के स्तर पर क्या सुधार आया और विभिन्न देश अपने यहां स्त्री एवं पुरुष के बीच स्वास्थ, शिक्षा, राजनीतिक भागीदारी, संसाधन व अवसरों का वितरण किस तरह से करते हैं?

नए सूचकांक में 17 सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में से 14 के 51 संकेतक शामिल हैं। सबसे ज्यादा हैरानी की बात यह है कि भारत, एशिया और प्रशांत क्षेत्र में निचले पायदान पर है। एशिया और प्रशांत के 23 देशों में उसे 17वें स्थान पर रखा गया है।

**वैश्विक स्त्री-पुरुष समानता सूचकांक की हाल ही में आई रिपोर्ट में भारत दुनिया के 129 देशों में से 95वें पायदान पर है। सामाजिक और सांस्कृतिक धरातल पर देखें, तो कई स्तरों पर हमारे देश में महिलाओं की स्थिति बेहद खराब है। भूमंडीकरण के दौर के बाद हमारे यहां महिलाओं की स्थिति और भी ज्यादा बिगड़ी है। महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा मौके देकर स्थिति में सुधार संभव है।**

ऐसा नहीं कि भारत की स्थिति हर क्षेत्र में निराशाजनक है, कुछ क्षेत्रों में देश ने तरक्की भी की है। मसलन भारत का सबसे ज्यादा स्कोर, एसडीजी तीन के स्वास्थ्य क्षेत्र (79.9), भूख और पोषण (76.2) और ऊर्जा क्षेत्र (71.8) में रहा। वहीं सबसे कम स्कोर भागीदारी क्षेत्र (18.3), उद्योग, बुनियादी ढांचा और नवोन्मेष (38.1) और जलवायु (43.4) में रहा। लैंगिक समानता के मामले में भारत की स्थिति में गिरावट कोई नई बात नहीं है। हमारे यहां यह सूचकांक कई सालों से ज्यों का त्यों हैं। इसमें कोई खास तब्दीली नहीं आई है। सामाजिक और सांस्कृतिक धरातल पर देखें, तो कई स्तरों पर हमारे देश में महिलाओं की स्थिति बेहद खराब है। देश में जब उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण जैसी आर्थिक नीतियां अमल में आईं, तो एक बारगी यह लगा कि अब महिलाओं की स्थिति सुधरेगी। उनको भी पुरुषों की तरह हर क्षेत्र में समानता का अवसर मिलेगा। श्रम का फेमिनाइजेशन होगा। लेकिन यह भ्रम बहुत जल्द ही टूट गया। खासकर भूमंडीकरण के दौर के बाद हमारे यहां महिलाओं की स्थिति और भी ज्यादा बिगड़ी है। उदारीकरण का पिछले दो दशकों का तजुर्बा हमें यह बतलाता है कि समाज में स्त्री-पुरुष के बीच असमानता बढ़ी है।

देश में तमाम क्षेत्रों में विकास की प्रक्रिया के दौरान महिलाओं के हिस्से में असमानता ही आई है। आंकड़े खुद गवाही देते हैं कि उदारीकरण के दौर में लाखों महिलाओं के हाथ से काम छिना है। एनएसएसओ के आंकड़ों के मुताबिक शहरों में महिलाओं की बेरोजगारी दर 10.8 प्रतिशत पर है। एक महत्वपूर्ण बात और जिन क्षेत्रों में महिलाएं कार्यरत हैं, वहां भी महिलाओं के लिए कार्य दशाएं उपयुक्त नहीं हैं। उन्हें वहां जरा सा भी सुरक्षित माहौल नहीं मिलता। उन्हें सरकार व समाज सुरक्षित माहौल मुहैया कराए, इसके उलट उन पर यह इल्जाम लगाया जाता है कि महिलाएं घर से बाहर काम नहीं करना चाहतीं। उनके संस्कार उन्हें घर के बाहर काम करने से रोकते हैं। जाहिर है कि इस बात में जरा सी भी सच्चाई नहीं। महिलाएं खुद चाहती हैं कि जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़कर अपनी हिस्सेदारी को बढ़ाएं। परिवार के लिए आर्थिक स्तर पर भी कुछ योगदान कर पाएं। वे भी हर क्षेत्र में नई-नई उड़ाने भरें। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलें। लेकिन हमारे समाज की जो पितृसत्रात्मक व्यवस्था है, उसमें महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझा जाता है। परिवार और समाज में उनके साथ शुरू से ही भेदभाव किया जाता है। समाज उन्हें इस लायक नहीं समझता कि वे पुरुष की बराबरी कर सकती हैं। जबकि चाहे कोई सा भी क्षेत्र हो, महिलाओं ने अपने आप को उसमें अच्छी तरह से साबित किया है। कई मामलों में तो उलटे उन्होंने पुरुषों से बेहतर काम किया है। महिलाएं घर के बाहर काम करना चाहती हैं, लेकिन कार्यस्थल पर उनके लिए जो सुरक्षित माहौल होना चाहिए, वह उन्हें नहीं मिलता।

■ **जाहिद खान**
(वरिष्ठ पत्रकार)

# एमएसएमई के रथ पर सवार विकास और रोजगार

**किसी** भी प्रदेश के विकास में उसके सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इन छोटे और मझोले उपक्रमों पर ही राज्य की आर्थिक गतिविधियों की बुनियाद टिकी होती है। यही कारण है कि दिसंबर 2018 में सत्ता में आने के बाद से ही मुख्यमंत्री कमल नाथ के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार निरंतर इस क्षेत्र को गति प्रदान करने के लिए एक के बाद एक कदम उठा रही है। कमल नाथ स्वयं उद्यमी परिवार से आते हैं और वे उद्योग जगत की चिंताओं और आवश्यकताओं से बहुत अच्छी तरह वाकिफ हैं। यही कारण है कि एमएसएमई विकास नीति जारी करते समय उन्होंने तमाम बातों का ध्यान रखा ताकि एमएसएमई क्षेत्र को एक खामी रहित नीति मिल सके।

एमएसएमई क्षेत्र न केवल देश बल्कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत मायने रखता है। 2008 में जब दुनिया में आर्थिक मंदी आई थी तब भारत के उससे बचे रहने में एमएसएमई क्षेत्र की अहम भूमिका थी। रोजगार प्रदान करने के मामले में भी इस क्षेत्र का कोई और सानी नहीं है। मुख्यमंत्री कमल नाथ के लिए भी प्रदेश के युवाओं को रोजगार दिलाना एक जरूरी मुद्दा रहा है। हम जानते ही हैं कि एमएसएमई क्षेत्र प्रदेश के सबसे बड़े रोजगार प्रदाता क्षेत्रों में शामिल है। यही वजह है कि एमएसएमई विकास नीति में ऐसे तमाम प्रावधान किए गए हैं जो प्रदेश के युवाओं, छोटे उद्यमियों और स मस्त अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक साबित होने वाले हैं। एमएसएमई क्षेत्र में नई नीति व स्टार्ट अप जगत को लेकर नई पहल के साथ प्रदेश की कमल नाथ सरकार औद्योगिक विकास, रोजगार और स्वरोजगार तीनों क्षेत्रों पर एक साथ काम कर रही है। एमसएसएमई क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए संयंत्र और मशीनरी के अलावा भवन निर्माण पर किए गए निवेश पर सीधे 40 फीसदी अनुदान देने की व्यवस्था की गई है। किसी महिला या अनुसूचित जाति-जनजाति के उद्यमी द्वारा स्थापित इकाई पर निवेश के 48 फीसदी या अजा-अजजा वर्ग की महिला द्वारा निवेश किए जाने पर निवेश की जाने वाली राशि के 50 फीसदी के बराबर अनुदान दिया जाएगा। इस नीति की सबसे अहम बातों में से एक यह भी है कि सरकारी रियायतों और अनुदान आदि का लाभ लेने वाले एमएसएमई उपक्रमों को अपने कुल रोजगार में से 70 फीसदी मध्य प्रदेश के स्थानीय युवाओं को देने होंगे। सरकार ने एमएसएमई विभाग के अधीन नई स्टार्ट अप नीति भी प्रस्तुत की है। नई नीति पहले की अपेक्षा अधिक लचीली और सहज है। इस नीति के तहत स्टार्ट अप का सहयोग करने के लिए 10 करोड़ रुपए की पूंजी सीड कैपिटल के रूप में उपलब्ध कराई जाएगी। नई स्टार्ट अप नीति में सरकार ने 50 करोड़ रुपए के निवेश से वेंचर फंड स्थापित करने की बात भी कही है।

सरकार ने स्टार्ट अप और इन्क्यूबेशन सेंटर को प्रत्येक चरण में सहायता मुहैया कराने की प्रतिबद्धता भी जताई है। इन्क्यूबेटर की स्थापना के लिए सरकार 50 लाख रुपए तक का पूंजी अनुदान मुहैया करा रही है। सरकार ने जबलपुर, भोपाल, ग्वालियर और इंदौर मे इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित करने की घोषणा भी की है। इससे पहले सरकार ने स्टार्ट अप इन्वेस्टर मीट का आयोजन किया जिसमें 40 प्रमुख स्टार्ट अप और 8 निवेशकों ने हिस्सेदारी की। इन्क्यूबेशन सेंटर पर काम करने के लिए चयनित युवाओं को प्रदेश सरकार न केवल एक वर्ष तक 10 हजार रुपए की मासिक सहायता देगी बल्कि उनको किराए की जगह भी निशुल्क उपलब्ध करायी जाएगी। स्टार्ट अप के लिए युवाओं का चयन बकायदा ऑनलाइन पोर्टल से पारदर्शी ढंग से किया जायेगा। एमएसएमई विकास नीति में पॉवरलूम, फार्मा और रेडीमेड वस्त्र क्षेत्र के लिए विशेष पैकेज की घोषणा की गई है। इसके अलावा भी एमएसएमई विभाग ने प्रदेश में स्वरोजगार उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना और मुख्यमंत्री कृषक उद्यमी योजना तैयार की हैं।

इस मामले में सरकार काफी हद तक वचन पत्र में किये गए अपने वादों पर खरी उतरती दिख रही है। कृषक उद्यमी योजना के अधीन पशुधन आधारित उद्योगों के लिए रियायती ब्याज का वादा सरकार ने निभाया है। नई एमएसएमई नीति में विभिन्न क्षेत्रों को प्रोत्साहन और विशेष पैकेज का वादा भी सरकार ने निभाया है। इसी तरह स्टार्ट अप नीति को भी वादे के मुताबिक संरक्षण प्रदान किया जा रहा है। कमल नाथ को स्वयं उद्योग जगत का लंबा अनुभव है। यही कारण है कि उन्हें उद्योगपतियों को काम के दौरान सामने आने वाली कठिनाइयों और दिक्कतों का अच्छी तरह अंदाजा है। उन्होंने उद्योगपतियों की दिक्कतों को समझा और उन्हें फौरन दूर करने के इंतजाम भी किए। उन्होंने नीतियों में बदलाव कुछ इस तरह किये कि स्थानीय युवाओं को अधिक से अधिक संख्या में रोजगार मिल सके और उद्योग धंधों को भी प्रोत्साहन मिले। छोटे उद्योगों को बढ़ावा देना मुख्यमंत्री की प्राथमिकता में है। यही वजह है कि नीतियों में छोटे उद्योगों को फायदा दिया गया है।

मुख्यमंत्री विकास का जो विजन लेकर चल रहे हैं उसमें एमएसएमई क्षेत्र की महत्वूपर्ण भूमिका है। इस क्षेत्र में जो नयी पहल प्रदेश सरकार ने की हैं, उनके परिणाम भी बहुत जल्दी हमारे सामने आने शुरू हो जाएंगे।

■ **पूजा सिंह**

# पुरस्कार पाकर भावुक हुए यंग एंग्रीमैन

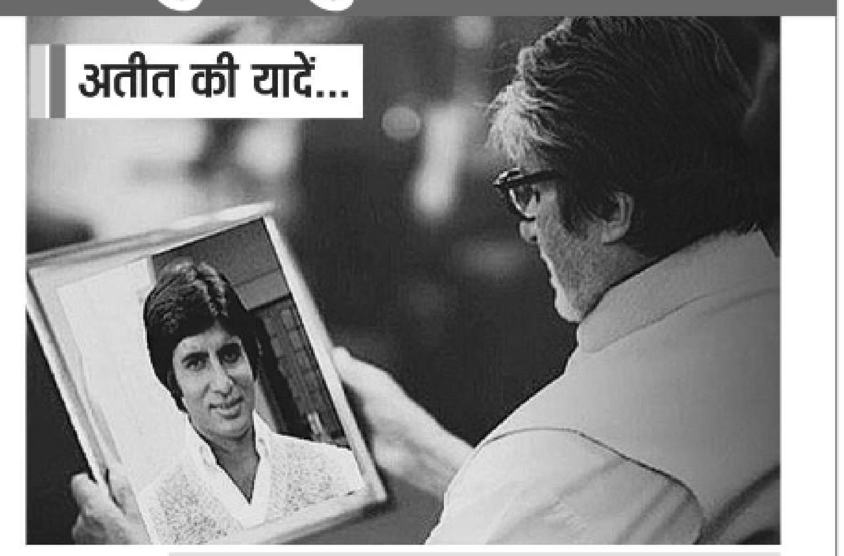


अमिताभ बच्चन हिंदी फिल्मों के अभिनेता हैं। हिंदी सिनेमा में चार दशकों से ज्यादा का वक्त बिता चुके अमिताभ बच्चन को उनकी फिल्मों से 'एंग्री यंग मैन' की उपाधि प्राप्त है। उन्हें लोग 'सदी के महानायक' के तौर पर भी जानते हैं और प्यार से बिग बी, शहंशाह भी कहते हैं। सदी के इस महानायक ने भी राजनीति में अपनी किस्मत आजमाई थी। वे राजीव गांधी के करीबी दोस्त थे इसलिये उन्होंने कांग्रेस पार्टी ज्वॉइन की थी और इलाहाबाद से देश आठवें आम चुनाव में ताकतवर नेता एचएन बहुगुणा को हराया था।

**पृष्ठभूमिः** अमिताभ बच्चन का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में हुआ था। उनके पिता का नाम हरिवंश राय बच्चन था। उनके पिता हिंदी जगत के मशहूर कवि रहे हैं। उनकी मां का नाम तेजी बच्चन था। उनके एक छोटे भाई भी हैं जिनका नाम अजिताभ है। अमिताभ का नाम पहले इंकलाब रखा गया था लेकिन उनके पिता के साथी रहे कवि सुमित्रानंदन पंत के कहने पर उनका नाम अमिताभ रखा गया।

**पढ़ाईः** अमिताभ बच्चन शेरवुड कॉलेज, नैनीताल के छात्र रहे हैं। इसके बाद की पढ़ाई उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोरीमल कॉलेज से की थी। पढ़ाई में भी वे काफी अव्वल थे और कक्षा के अच्छे छात्रों में उनकी गिनती होती थी। कहीं ना कहीं ये गुण उनके पिताजी से ही आए थे क्योंकि वे भी जाने-माने कवि रहे थे।

**शादीः** अमिताभ बच्चन की शादी जया बच्चन से हुई जिनसे उन्हें दो बच्चे हैं। अभिषेक बच्चन उनके सुपुत्र हैं और श्वेता नंदा उनकी सुपुत्री हैं।

**करियरः** अमिताभ बच्चन की शुरूआत फिल्मों में वॉयस नैरेटर के तौर पर फिल्म भुवन शोम से हुई थी लेकिन अभिनेता के तौर पर उनके करियर की शुरूआत फिल्म सात हिंदुस्तानी से हुई। इसके बाद उन्होंने कई फिल्में कीं लेकिन वे ज्यादा सफल नहीं हो पाईं। फिल्म जंजीर उनके करियर का टर्निंग प्वाइंट साबित हुई।

## अमिताभ के करियर का बुरा दौर

उनकी फिल्में अच्छा बिजनेस कर रही थीं कि अचानक 26 जुलाई 1982 को कुली फिल्म की शूटिंग के दौरान उन्हें गंभीर चोट लगी गई। दरअसल, फिल्म के एक एक्शन दृश्य में अभिनेता पुनीत इस्सर को अमिताभ को मुक्का मारना था और उन्हें मेज से टकराकर जमीन पर गिरना था। लेकिन जैसे ही वे मेज की तरफ कूदे, मेज का कोना उनके आंतों में लग गया जिसकी वजह से उनका काफी खून बह गया और स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि ऐसा लगने लगा कि वे मौत के करीब हैं लेकिन लोगों की दुआओं की वजह से वे ठीक हो गए।

## राजनीति में प्रवेश

- कुली में लगी चोट के बाद उन्हें लगा कि वे अब फिल्में नहीं कर पाएंगे और उन्होंने अपने पैर राजनीति में बढ़ा दिए। उन्होंने 8वें लोकसभा चुनाव में अपने गृह क्षेत्र इलाहाबाद की सीट से उप्र के पूर्व मुख्यमंत्री एचएन बहुगुणा को काफी ज्यादा वोटों से हराया।
- राजनीति में ज्यादा दिन वे नहीं टिक सके और फिर उन्होंने फिल्मों को ही अपने लिए उचित समझा।
- जब उनकी कंपनी एबीसीएल आर्थिक संकट से जूझ रही थी तब उनके मित्र और राजनीतिज्ञ अमर सिंह ने उनकी काफी मदद की थी। बाद में अमिताभ ने भी अमर सिंह की समाजवादी पार्टी को काफी सहयोग किया। उनकी पत्नी जया बच्चन ने समाजवादी पार्टी को ज्वाइन कर लिया और वे राज्यसभा की सदस्य बन गईं। अमिताभ ने पार्टी के लिए कई विज्ञापन और राजनीतिक अभियान भी किए।
- फिल्मों से एक बार फिर उन्होंने वापसी की और फिल्म शहंशाह हिट हुई। इसके बाद उनके अग्निपथ में निभाए गए अभिनय को भी काफी सराहा गया और इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिला लेकिन उस दौरान बाकी कई फिल्में कोई खास कमाल नहीं दिखा सकीं।

## प्रसिद्ध फिल्में

सात हिंदुस्तानी, आनंद, जंजीर, अभिमान, सौदागर, चुपके चुपके, दीवार, शोले, कभी कभी, अमर अकबर एंथनी, त्रिशूल, डॉन, मुकद्दर का सिकंदर, मि. नटवरलाल, लावारिस, सिलसिला, कालिया, सत्ते पे सत्ता, नमक हलाल, शक्ति, कुली, शराबी, मर्द, शहंशाह, अग्निपथ, खुदा गवाह, मोहब्बतें, बागबान, ब्लैक, वक्त, सरकार, चीनी कम, भूतनाथ, पा, सत्याग्रह, शमिताभ जैसी शानदार फिल्मों ने ही उन्हें सदी का महानायक बना दिया।

## पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के तौर पर उन्हें तीन बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चुका है। इसके अलावा 14 बार उन्हें फिल्मफेयर अवार्ड भी मिल चुका है। फिल्मों के साथ साथ वे गायक, निर्माता और टीवी प्रजेंटर भी रहे हैं। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान से भी नवाजा है

## **अमिताभ बच्चन** से जुड़ी कुछ दिलचस्प बातें

- अमिताभ बच्चन सदी के महानायक कहे जाते हैं। वे हिन्दी फिल्मों के सबसे बड़े सुपरस्टार माने जाते हैं।
- उन्हें असली पहचान फिल्म जंजीर से मिली थी। यह फिल्म अमिताभ से पहले कई बड़े अभिनेताओं को ऑफर हुई थी जिसमें मशहूर अभिनेता राजकुमार भी शामिल थे लेकिन राजकुमार ने इस फिल्म को यह कहकर ठुकरा दिया था कि डायरेक्टर के बालों के तेल की खुशबू अच्छी नहीं है।
- 70 और 80 के दौर में फिल्मी सीन्स में अमिताभ बच्चन का ही आधिपत्य था। इस वजह से फ्रेंच डायरेक्टर फरांस्वा त्रुफो ने उन्हें वन मैन इंडस्ट्री तक करार दिया था।
- अपने करियर के दौरान उन्होंने कई पुरस्कार जीते हैं जिसमें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के तौर पर 3 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी शामिल है। इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल्स और कई अवार्ड समारोहों में उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वे 14 फिल्मफेयर पुरस्कार भी जीत चुके हैं। उन्हें फिल्मफेयर में सबसे ज्यादा 39 बार नामांकित किया जा चुका है।
- फिल्मों में बोले गए उनके डॉयलाग आज भी लोगों के दिलों में ताजा हैं। उनके सुपरहिट करियर में उनके फिल्म्स के डॉयलाग्स का भी अहम रोल रहा है।
- उन्हें भारत सरकार की तरफ से 1984 में पद्मश्री, 2001 में पद्मभूषण और 2015 में पद्मविभूषण जैसे सम्मान मिल चुके हैं।
- करियर के शुरुआती दौर में उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था। उनकी फिल्में लगातार फ्लाप हो रही थीं तब वे वापिस घर लौटने का मन बना चुके थे लेकिन फिल्म जंजीर उनके करियर का टर्निंग प्वाइंट बन गई और फिल्म इंडस्ट्री में एंग्री यंग मैन का उदय हुआ।
- एक समय था जब उनकी आवाज उनके करियर में रोड़ा बन रही थी और उन्हें नकार दिया गया था लेकिन बाद में उनकी आवाज ही उनकी ताकत बनी। उन्हें कई निर्देशकों ने कई फिल्मों में अपनी कहानी को नैरेट तक करवाया। कई प्रोग्राम्स को उन्होंने भी होस्ट किया।

# साल का राजनीतिक घटनाक्रम

## मोदी सरकार की शानदार वापसी, सपा-बसपा, कांग्रेस शिवसेना का साथ आना रहा अहम रहा

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** मोदी सरकार की प्रचंड बहुमत के साथ वापसी, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी, महाराष्ट्र में कांग्रेस का शिवसेना से हाथ मिलाना तथा आंध्र प्रदेश में जगनमोहन रेड्डी की सुनामी जैसे राजनीतिक घटनाक्रम के लिये वर्ष 2019 को याद किया जाएगा। इस वर्ष अप्रैल मई में हुए लोस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी को जिस तरह का जबर्दस्त समर्थन मिला उसके लिए 2019 लंबे समय तक चर्चा में रहेगा। मोदी लहर में सवार भाजपा को उत्तर, पश्चिम और मध्य भारत में प्रचंड जन समर्थन मिला और लोकसभा में उसकी सीटों की संख्या तीन सौ को पार कर गयी। मोदी की आंधी में कांग्रेस के पैर एक बार फिर उखड़ गये और वह लगातार दूसरी बार लोकसभा में मुख्य विपक्षी दल बनने के लिए जरुरी सीटें जीत पाने में विफल रही। लोकसभा चुनाव में अपने शानदार प्रदर्शन को भाजपा राज्यों में दोहरा नहीं सकी तथा महाराष्ट्र और झारखंड के विधानसभा चुनावों में उसे बड़ा झटका लगा। ये दोनों राज्य उसके हाथ से निकल गये। अक्टूबर में हरियाणा और महाराष्ट्र में हुये चुनावों में वह अपना पिछला प्रदर्शन दोहरा नहीं सकी। हरियाणा में चुनाव के बाद उसने दुष्यंत चौटाला की जननायक जनता पार्टी से हाथ मिलाकर फिर से सरकार बना ली लेकिन महाराष्ट्र में उसका पुरानी सहयोगी शिवसेना से नाता टूटा और राज्य भी हाथ से निकल गया। महाराष्ट्र में कांग्रेस का शिवसेना के साथ मिलकर सरकार बनाना चौकाने वाला कदम रहा। पूर्व केंद्रीय मंत्री और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी प्रमुख शरद पवार किंगमेकर बन कर उभरे और उनके प्रयासों से राज्य में राकांपा, कांग्रेस और शिवसेना की सरकार बनी तथा श्री उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री बने।

- राज्य में जिस तरह हड़बड़ी में भाजपा नेता देवेंद्र फडनवीस को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलायी गयी वह चर्चा का विषय बन गया लेकिन श्री फडनवीस को तीन दिन में ही अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा। पिछले वर्ष सबसे बड़े दल के रुप में उभरने के बावजूद कर्नाटक में सरकार बनाने में विफल रही भाजपा इस वर्ष राज्य पर फिर से कब्जा करने में सफल हुयी। कांग्रेस और जनता दल (एस) के कई विधायकों को अयोग्य ठहराये जाने से उसे सरकार बनाने का मौका मिल गया।
- झारखंड विधानसभा चुनाव में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। झारखंड मुक्ति मोर्चा, कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल के गठबंधन ने 81 में से 47 सीटें जीतकर भाजपा को सत्ता से बाहर कर दिया। पांच वर्ष मुख्यमंत्री रहे रघुवर दास भी अपनी सीट बचा नहीं पाये।
- वर्ष के शुरू में एक बहुत बड़ा राजनीतिक घटनाक्रम उप्र में देखने में आया जब राज्य के दो प्रमुख राजनीतिक दलों सपा-बसपा ने मिलकर लोस चुनाव लड़ने की घोषणा की। 25 वर्ष के बाद न केवल कट्टर प्रतिद्वंदी साथ आये बल्कि बसपा प्रमुख मायावती ने सपा नेता मुलायम सिंह यादव के समर्थन में चुनाव प्रचार किया।

## तीन राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा के विजय रथ को रोका और सत्ता में वापसी की

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारतीय जनता पार्टी के 'कांग्रेस मुक्त भारत' के सपने को मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान विधानसभा चुनावों में धराशायी करने से उत्साहित कांग्रेस ने आम चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मात देने का हर दांव खेला लेकिन करारी शिकस्त ने उसे ऐसा झटका दिया कि हताश होकर उसके युवा नेता राहुल गांधी ने अध्यक्ष पद छोड़ दिया और फिर पार्टी नेतृत्व के संकट से जूझती रही। केंद्र में 2014 में मोदी सरकार आने के बाद कांग्रेस ने पहली बार पिछले साल के आखिर में इन तीन राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा के विजय रथ को रोका और सत्ता में वापसी की। इससे उत्साहित पार्टी को लगा कि जनता का श्री मोदी से मोहभंग हो गया है और वह फिर से केंद्र में सत्ता में वापसी कर सकती है। पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष राहुल गांधी ने मोदी पर निशाना साधना साधते हुए उन्हें राफेल लड़ाकू विमान सौदे को लेकर घेरना आरंभ कर दिया। पार्टी ने इसके लिए कई तरह के दस्तावेज और अन्य सबूत निकालने शुरू कर दिए । मीडिया के माध्यम से यह साबित करने में जुट गये कि राफेल सौदे में दलाली हुई है और श्री मोदी इसमें सीधे तौर पर शामिल रहे हैं। श्री गांधी अपनी लगभग हर चुनावी सभा में इस मुद्दे को जमकर उछाला और मीडिया के माध्यम से इसे हवा देने का पूरा प्रयास किया। श्री मोदी के लिए कांग्रेस अध्यक्ष का 'चौकीदार चोर है' नारा इतना चल पड़ा कि श्री गांधी की कोई भी चुनावी सभा इसके बिना पूरी नहीं होती। आम चुनाव से ठीक पहले पार्टी ने श्री गांधी की बहन प्रियंका गांधी वाड्रा को तुरुप के पत्ते के रूप में इस्तेमाल कर उन्हें राजनीति में उतारा और उत्तर प्रदेश का प्रभारी महासचिव बना कर सबको चौंका दिया।

- श्री गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में नया प्रयोग किया और राज्य को पूर्वी तथा पश्चिमी दो भागों में बांटकर दो महासचिव नियुक्त कर दिये। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का जिम्मा युवा नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया को और पूर्वी उत्तर प्रदेश का दायित्व प्रियंका गांधी वाड्रा को सौंपा।
- यह रणनीति कार्यकर्ताओं में उत्साह का नया संचार करने लगी। श्री गांधी ने प्रियंका गांधी तथा ज्योतिरादित्य को मैदान में उतार कर देश की जनता को यह संदेश देने का भी प्रयास किया कि कांग्रेस में युवा जोश है। लोकसभा चुनाव परिणामों ने कांग्रेस और उसके नेताओं की आशाओं पर पानी फेर दिया। लगातार दूसरी बार पार्टी इतनी सीटें भी जीत नहीं पायी कि उसे लोकसभा में मुख्य विपक्षी दल का दर्जा मिल सके।
- करारी शिकस्त से पार्टी में हताशा छा गयी। श्री गांधी ने हार की जिम्मेदारी लेते हुए अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। पार्टी की सर्वोच्च नीति निर्धारक संस्था कार्य समिति ने उनसे पद से इस्तीफा नहीं देने का आग्रह किया लेकन वह अपनी जिद पर अड़े रहे। आम चुनाव में हार के कारण उपजी निराशा को दूर करने के लिए श्रीमती सोनिया गांधी ने फिर से पार्टी की कमान संभाली।

# भारतीय नौसेना ने बनाई छह पनडुब्बी निर्माण की योजना

**नई दिल्ली, (एजेंसी)।** भारतीय नौसेना पानी के नीचे के अपने बेड़े के लिए योजनाओं के हिस्से के रूप में 18 पारंपरिक और छह परमाणु हमले करने वाली पनडुब्बियों का एक बेड़ा बनाने की योजना बना रही है।

### स्थायी समिति ने पेश की रिपोर्ट

रक्षा संबंधी स्थायी समिति ने संसद के शीतकालीन सत्र में रिपोर्ट में कहा कि 18 (पारंपरिक) और छह एसएसएन (परमाणु हमले के लिए संचालित) पनडुब्बियों की योजना बनाई गई है, लेकिन नौसेना की मौजूदा ताकत 15 है और 1 एसएसएन पट्टे पर उपलब्ध है।

### निजी क्षेत्र के उद्योगों के साथ साझेदारी में योजना

भारतीय नौसेना ने अरिहंत क्लास एसएसबीएन के साथ छह परमाणु हमले वाली पनडुब्बियों के निर्माण की योजना बनाई है जो परमाणु मिसाइलों से लैस परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बी है। परमाणु हमले की पनडुब्बियों को भी निजी क्षेत्र के उद्योगों के साथ साझेदारी में स्वदेश निर्मित करने की योजना है। वर्तमान में नौसेना रूसी मूल की किलो वर्ग, जर्मन मूल की एचडीडब्लू वर्ग और पारंपरिक डोमेन में नवीनतम फ्रेंच स्कॉर्पीन क्लास की पनडुब्बियों का संचालन कर रही है, जबकि परमाणु खंड में इसने रूस से एक आईएनएस चक्र (अकुला वर्ग) को पट्टे पर दिया है।

### पिछले 15 वर्षों में सिर्फ दो नई पारंपरिक पनडुब्बियों हुई शामिल

नौसेना ने संसदीय समिति को यह भी बताया कि पिछले 15 वर्षों में सिर्फ दो नई पारंपरिक पनडुब्बियों को स्कॉर्पीन श्रेणी के जहाज आईएनएस कलवरी और आईएनएस खंडेरी को शामिल किया गया है। स्थायी समिति की अपनी रिपोर्ट में कहा है कि मौजूदा 13 पारंपरिक पनडुब्बियों की उम्र 17 से 31 साल के बीच है। नौसेना अपने प्रोजेक्ट 75 इंडिया के तहत छह नई पनडुब्बियों के निर्माण की योजना पर भी काम कर रही है। नौसेना द्वारा भारतीय कंपनियों और विदेशी मूल की उपकरण निर्माताओं के साथ छह और पारंपरिक पनडुब्बियों का निर्माण किया जाएगा।

## क्रिस्टीना कोच बनीं अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने वाली महिला

**न्यूयॉर्क (एजेंसी)।** नासा की अंतरिक्ष यात्री क्रिस्टीना कोच अंतरिक्ष में सबसे ज्यादा समय तक रहने वाली महिला बन गई हैं। फ्लाइट इंजीनियर क्रिस्टीना ने बीते शनिवार को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) में 288 दिनों तक रहने का नासा की ही अंतरिक्ष यात्री पेगी व्हिट्सन का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

### स्कॉट केली के नाम है रिकॉर्ड

क्रिस्टीना फरवरी, 2020 में आइएसएस से वापस लौटेंगी। वह इस साल अक्टूबर में आइएसएस से बाहर आकर अंतरिक्ष में चहलकदमी करने वाली महिलाओं की टीम में भी शामिल थीं। आइएसएस में सबसे लंबे समय (340 दिन) रहने का रिकॉर्ड स्कॉट केली के नाम है, जो 2015-16 के दौरान अंतरिक्ष में थे।

### पेगी हैं आदर्श

क्रिस्टीना ने बीते गुरुवार को अंतरिक्ष में लंबे समय तक सफलतापूर्वक रुकने में मदद के लिए पेगी का शुक्रिया अदा किया था। उन्होंने कहा, पेगी मेरी आदर्श रही हैं। आइएसएस में रहने के दौरान उन्होंने मेरा काफी मार्गदर्शन किया। धरती पर लौटने के बाद मैं भी अंतरिक्ष यात्रियों को मार्गदर्शन दूंगी।

### बेसबॉल खेल का लुत्फ उठाया था

पिछले 4 नवबर, 2019 को अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आइएसएस) में तीन अंतरिक्ष यात्री बेसबॉल खेल का लुत्फ उठाया। अंतरिक्ष यात्री जेसिका मीर द्वारा ट्वीट किए गए वीडियो में वह स्वयं गेंद फेंकते हुए दिखीं, जबकि क्रिस्टीना कोच कैचर हैं। एंड्र्यू मॉर्गन फ्लैशलाइट का इस्तेमाल बैट के तौर पर कर रहे हैं। वीडियो में वह पहली ही गेंद पर जेसिका मीर के हाथों कैच आउट हो गईं। आइएसएस में बेसबॉल खेलने वालीं अंतरिक्ष यात्री जेसिका मीर और क्रिस्टीना कोच ने दो महीने पहले पहली बार केवल महिला स्पेस वॉक से इतिहास रचा था। दोनों ने करीब साढ़े छह घंटे तक अंतरिक्ष में चहलकदमी की थी।

पिछले 18 अक्टूबर को हुई स्पेसवॉक पहले इस वर्ष 29 मार्च को होनी थी। नासा के अनुसार, क्रिस्टीना कोच के साथ एनी मैकक्लेन उस अभियान का हिस्सा थीं। हालांकि, मैकक्लेन के लिए आइएसएस में उपयुक्त स्पेससूट न होने से उस समय उसे टाल दिया गया।

## निर्दोषों को सताने वाले अफसरों का हिसाब किताब करेगी सपा

**लखनऊ, (एजेंसी)।** सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने नागरिकता संशोधन कानून के विरोध प्रदर्शन के दौरान भड़की हिंसा में पुलिस प्रशासन की भूमिका पर संदेह जताते हुएसपा सरकार आने पर दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई करने की चेतावनी दी और साथ ही एनपीआर का बहिष्कार करने की अपील की।

श्री यादव ने रविवार को पार्टी दफ्तर में छात्र नेताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अलोकतांत्रिक तरीके से लागू किये गये सीएए का विरोध करने पर छात्रों को घेर कर मारा गया। पुलिस ने छात्रावास में घुस कर कार्रवाई की। शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन कर रहे छात्रों और नौजवानों पर गंभीर धाराएं लगाई गई। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि मौजूदा सरकार को पता होना चाहिये कि समाजवादी लोग मुकदमो से नहीं डरते। सपा सरकार के सत्ता में आने पर न सिर्फ इन मुकदमों को वापस लिया जायेगा बल्कि सीएए की आड़ में छात्रों और बेकसूर नौजवानों पर बल प्रयोग करने वाले अधिकारियों का भी हिसाब किताब होगा।सपा अध्यक्ष ने छात्रों को नसीहत देते हुये कहा कि वे अपनी सही ऊर्जा का इस्तेमाल सही समय पर करे।

## मुखबिरी के आरोप में नक्सलियों ने दो लोगों को गोलियों से भूना

**चानन (एजेंसी)।** लखीसराय जिले के चानन थाना क्षेत्र के दो अलग-अलग जगहों पर नक्सलियों ने पुलिस मुखबिरी का आरोप लगाते हुए दो लोगों की गोली मार कर हत्या कर दी है। वारदात को अंजाम देने के बाद मौके पर पर्चा फेंक कर मुखबिरी करनेवालों को अंजाम भुगतने की चेतावनी भी दी है।

पहली घटना भलुई पंचायत की बासकुंड कोड़ासी में एक सामाजिक कार्यकर्ता मोगल कोड़ा को शनिवार की देर रात घर से निकाल गोलियों से भून डाला। वहीं दूसरी ओर कुंदर पंचायत के गोबरदाहा कोड़ासी अपनी ससुराल में रह रहे संजय कोड़ा की भी गोली मारकर कर हत्या कर दी गयी। दोनों लोगों पर पुलिस मुखबिरी का आरोप लगाते हुए नक्सलियों ने पर्चा भी छोड़ा है। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस की टीम घटनास्थल की ओर रवाना कर दी गयी है।

## अलाव सेंक रहे लोगों को कार ने कुचला, तीन मरे, पांच घायल

**जींद, (एजेंसी)।** रामगढ़ गांव के निकट बस अड्डे पर रविवार अल सुबह एक तेज रफ्तार कार ने अलाव सेंक रहे आठ लोगों को अपनी चपेट में ले लिया, जिसमें बाप-बेटे समेत तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि पांच गंभीर घायल हो गए।

घटना अनुसार अजमेर बस्ती निवासी राजू (55), उनके बेटे मोनू (24) की मौत हो गई और मोहित (17) की मौके पर ही मौत हो गई तथा भूपेंद्र नगर निवासी सोनू, दुर्गा बस्ती निवासी सतीश, अजमेर बस्ती निवासी बादशाह, संदीप और कमरूद्दीन घायल हो गए। यह लोग शादियों में वेटर का कार्य करते हैं और एक शादी में कार्य के लिए हिसार के लिए निकले थे।

थ्रीव्हीलर चालक ने उन्हें गांव रामगढ़ बस अड्डे पर छोड़ दिया जहां ठंड से बचने के लिए सभी आठ वेटरों ने चाय के खोखे के निकट आग जला कर सेंकना शुरू कर दिया। जींद की तरफ से आई तेजरफ्तार कार ने उन्हें कुचल दिया। घायलों को उपचारार्थ सामान्य अस्पताल पहुंचाया गया जहां चिकित्सकों ने सोनू, सतीश, कमरूद्दीन की हालत गंभीर देख पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया। दुर्घटना के बाद कार भी 30 फीट जाकर पलट गई और चालक फरार हो गया।

## रक्सौल से संन्यासी वेश में नेपाल जा रहा ईरानी बंदी

**रक्सौल (एजेंसी)।** नेपाल से लगे बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के रक्सौल से रविवार को संन्यासी के वेश में ईरान के हेमेड अकबरी को संदेह के आधार पर गिरफ्तार कर लिया गया है। रक्सौल से नेपाल जा रहे एक विदेशी नागरिक को संदेह के आधार पर भारत-नेपाल मैत्री बस में सवार आव्रजन कार्यालय के अफसरों ने जांच के बाद गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवक बगैर भारतीय वीजा के संन्यासी के वेश में था। युवक की पहचान ईरान के हेमेड अकबरी के रूप में की गई है। पूछताछ में विदेशी युवक ने बताया कि पिछले 11 वर्षों से वह भारत में रह रहा है और बोधगया से रक्सौल के रास्ते नेपाल जा रहा था।

# चीन में दुनिया का सबसे बड़ा आइस पार्क, -20 डिग्री तापमान

**बीजिंग ■ एजेंसी**

चीन के हेइलोंगजियांग प्रांत के हार्बिन शहर में दुनिया का सबसे बड़ा आइस पार्क खुल गया है। -20 डिग्री तापमान में 2000 कलाकारों ने दिन रात मेहनत कर बर्फ से बनी कलाकृतियां बनाई हैं।

हाड़ कंपा देने वाली ठंड में करीब 40 देशों के कलाकार 150 से ज्यादा कार्यक्रमों में अपना हुनर दिखा रहे हैं। यह फेस्ट दो महीने तक चलेगा और यह विश्व का अपनी तरह का इकलौता पार्क है। बता दें कि हेइलोंगजियांग प्रांत चीन का सबसे ठंडा प्रदेश है। यहां तापमान -20 डिग्री से नीचे ही रहता है। लोगों को इस प्रदेश में घूमने आने के लिए प्रेरित करने को सरकार ने यह आइस पार्क बनाने की सोची।

6 लाख स्क्वायर फीट में बना है पार्क

2.2 लाख क्यूबिक मीटर बर्फ का हुआ है इस्तेमाल

21 अलग-अलग जगहों की प्रसिद्ध आकृतियां बनीं

1,16,800 लोग तीन दिनों में आ चुके हैं पार्क घूमने

30.5 करोड़ रुपए की हो चुकी है कमाई

दो महीने तक चलेगा यह आइस फेस्टिवल

सर्दी के तीखे तेवर — 1 और 2 जनवरी को बदलेगा मौसम, बढ़ेगी सर्दी

# बारिश के साथ होगा नए साल का आगाज

**नई दिल्ली ■ एजेंसी**

मौसम के जानकारों का अनुमान है कि नए साल 2020 का आगाज कुछ राज्यों के लिए बारिश के साथ होने वाला है। अगले 24 घंटों में भी कुछ स्थानों पर बारिश होगी। पिछले दो दिन से सर्दी ने अपना असर दिखाना शुरू किया है। ऐसे में बारिश के चलते ठंड गहरा सकती है। श्रीनगर में रविवार को भीषण ठंड के कारण डल झील जम गई। माउंटआबू में जमाव बिन्दू से तीन डिग्री सेल्सियस नीचे पहुंच गया।

- 1 जनवरी व 2 जनवरी को पंजाब और हरियाणा के अलग-अलग हिस्सों में बारिश की संभावना है। यहां गरज के साथ छींटे भी पड़ सकते हैं।
- नई दिल्ली के कुछ अलग-थलग इलाकों में 1 और 2 जनवरी को बारिश के साथ ओलावृष्टि की संभावना जताई गई है। दिल्ली के पालम और सफदरगंज में न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी हुई है।

- अगले 24 घंटों के दौरान दक्षिणी भारत के कई शहरों में बारिश हो सकती है। यहां काकीनाड़ा, मछलीपट्टनम, नेल्लोर, तिरुपति, कुरनूल, अनंतपुर, हैदराबाद, महबूब नगर, विशाखापत्तनम और विजयवाड़ा जैसी जगहों पर गड़गड़ाहट के साथ बारिश होने की संभावना है। गरज व चमक के साथ छींटे भी पड़ सकते हैं।
- अगले 24 से 48 घंटों के दौरान महाराष्ट्र के नागपुर, अकोला, अमरावती, गोंदिया, चंद्रपुर, नांदेड़, लातूर, परभणी और औरगांबाद आदि स्थानों पर बारिश की संभावना है।
- जनवरी के आसपास तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के उत्तरी भागों में बादल छाएंगे जो बारिश लाएंगे। इसके बाद यहां दिन के तापमान में कमी महसूस की जाएगी।
- साल के अंत तक महाराष्ट्र के विदर्भ, मराठवाड़ा, मुंबई, नागपुर और पुणे में बेमौसम बारिश हो सकती है। हालांकि यह बारिश हल्की रहेगी लेकिन इससे कंपकंपी बढ़ेगी।
- 1 जनवरी को श्रीनगर, शिमला, नैनीताल, कुल्लू, मनाली, पटनीटॉप, उत्तरकाशी, चमोली, और कई अन्य आस-पास के इलाकों सहित कई हिस्सों में बारिश और बर्फबारी देखने को मिलेगी।
- अगले दो दिनों में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, मराठवाड़ा, दक्षिण मध्य महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, उत्तरी केरल, खाड़ी द्वीप समूह और लक्षदीप क्षेत्र के दक्षिणी हिस्सों में हल्की बारिश और गरज के साथ बौछारें पड़ने की संभावना है।

Printed, Published & Owner by ATUL SHARMA & Printed at SARANGLE PRINTERS, BASTI GUZAN JALANDHAR (PUNJAB) and Published from ATUL SHARMA, NN-453 GOPAL NAGAR JALANDHAR (PUNJAB)

Editor: ATUL SHARMA*

*Responsible for selection of News under the PRB ACT. PUNHIN/2019/77863, All Rights Reserved. Reproduction in whole or in part without permission is prohibited. All disputes shall be settled at Jalandhar jurisdiction only.

# कैप्टन ने पंजाब को प्रगतिशील, शांत और सुरक्षित राज्य बनाए रखने के वायदे के साथ राज्य निवासियों को नए साल 2020 की मुबारकबाद दी

**चंडीगढ़/ब्यूरो**

पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने मंगलवार को नए साल की पूर्व संध्या पर पंजाब को प्रगतिशील, शांत, सद्भावना भरपूर और सुरक्षित बनाए रखने के वायदे के साथ रा%्य निवासियों को नए साल 2020 की बधाई दी।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने लोगों को न्यौता दिया कि वह धर्म निरपेक्षता, प्रभुसत्ता, सांप्रदायिक सद्भावना और राष्ट्रीय एकता की रक्षा के लिए इकठ्ठा होकर पूरे जोश के साथ काम करने की वचनबद्धता के साथ नए साल 2020 का स्वागत करें। उन्होंने साथ ही लोगों से अपील की कि वह सर्वपक्षीय विकास के साथ पंजाब को देश का अग्रणी रा%्य बनाने का भी प्रण करें जिससे विकास का लाभ ज़मीनी स्तर पर नज़र आए। मुख्यमंत्री ने हरेक नागरिक के लिए खुशी और खुशहाली वाला नया साल होने की कामना करते हुए इस बात पर विश्वास प्रकटाया कि आने वाला साल पंजाब के सर्वपक्षीय विकास और तरक्की में नया अध्याय लिखेगा।

अपने संदेश में मुख्यमंत्री ने आशा अभिव्यक्त की कि समूची दुनिया के लोग पहले सिख गुरू श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं पर चलेंगे जिनका 550वां प्रकाश पर्व हाल ही में पूरी धार्मिक श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया है। उन्होंने कहा कि लोगों को सिख धर्म के संस्थापक द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलना चाहिए जिससे राष्ट्रीय एकता, शान्ति, प्यार और धार्मिक सहनशीलता को और मज़बूत किया जा सके।

# साल 2019 की तो हो गई विदाई पर चुनौतियां भरा रहेगा नया साल

साल 2019 की विदाई के साथ ही नए साल 2020 का स्वागत। 31 दिसम्बर की रात 12 बजे नए साल की हैप्पी न्यू ईयर के शब्द घोष के साथ नए साल का आगाज हो गया है। हांलाकि सोशियल मीडिया पर मजाक में ही सही पर दो हजार बीस को ट्वंटी ट्वंटी कहकर पुकारा जा रहा है। माना जा रहा है कि 2020 ट्वंटी ट्वंटी की ही तरह रहेगा। राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में उथल-पुथल भरे 2019 की कड़वी मीठी यादों को भुलाकर हमारे सामने नए साल में नए संकल्प के साथ आगे बढ़ने का अवसर आया है। देशवासियों की राजनीतिक परिपक्वता को इसी से समझा जा सकता है कि साल के शुरुआत में लोकसभा चुनावों का साया होने और इसके ठीक पहले तीन राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा की हार के बावजूद मई में हुए लोकसभा चुनावों में भाजपा और नरेन्द्र मोदी को अपार जन समर्थन मिला। तस्वीर का दूसरा पक्ष यह भी है कि साल के अंत होते होते हरियाणा में जैसे तैसे भाजपा की सरकार बन पाई तो महाराष्ट्र व झारखण्ड में कांग्रेस गठबंधन की सरकारें बन गई। यही तो लोकतंत्र की ताकत है कि जनता कब किसकी सरकार बना दे, कब किस पर मेहरबान हो जाए यह कहा नहीं जा सकता। राज्यों में सिमटती भाजपा के सामने नए साल में बिहार व पश्चिमी बंगाल बड़ी चुनौती होंगी तो अपने सहायोगियों को बांधें रखना भी बड़ी समस्या ही मानी जानी चाहिए।

हांलाकि 2019 कश्मीर में 370 की विदाई, सीएए, पीएनआर और एनआरसी के रुप में याद किया जाएगा। सीएए, पीएनआर और एनआरसी के चलते आज सारे देश में उबाल आया हुआ है। पक्ष विपक्ष में जनता के सामने विरोध व समर्थन का दौर चल रहा है। हांलाकि इस आंदोलन के चलते एक नई दिशा अवश्य मिली है और वह राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में शांति मार्च तो न्यायालय द्वारा पहले हिंसा रोकने का निर्देश और उत्तरप्रदेश में हिंसा फैलाने वालों से नुकसान की भरपाई और कर्नाटक में उपद्रव में शामिल मृतकों को सहायता राशि नहीं देने का निर्णय, ऐसे निर्णय है जो प्रदर्शनों के दौरान हिंसा फैलाने और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वालों के लिए सावचेत करने को काफी होना चाहिए। इसे भी पढ़ें- साल 2020- नव उमंग, नव तरंग, जीवन का नव प्रसंग इसमें कोई दो राय नहीं की 2018 की तरह ही 2019 को भी विदेशी मामलों में सफल कहा जा सकता है। कश्मीर मुद्दे पर दुनिया के देशों द्वारा पाकिस्तान को समर्थन नहीं दिया जाना इसका सीधा-सीधा संकेत है। हमारी विदेश नीति का ही परिणाम है कि भारत के निर्णयों के खिलाफ कोई देश मुखर आवाज नहीं उठा पाएं हैं। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि विदेशों में भारत की पैठ बनी है। हांलाकि आर्थिक मामलों में देश के सामने गंभीर चुनौतियां है। देश की विकास दर निचले स्तर पर आ गई है तो सुधारात्मक प्रयासों के बावजूद अभी आर्थिक हालातों के सुधार के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं। कल कारखानों में उत्पादन कम हुआ है तो रोजगार के अवसर कम होने से युवाओं में भी निराशा है। नोटबंदी और जीएसटी से अभी कारोबारी उभर नहीं पाए हैं। बाजार में पैसे का फ्लो कम होने से मंदी का दौर जारी है। हांलाकि यह विश्वव्यापी मंदी का दौर है। पर यह कहने से काम नहीं चल सकता और सरकार को आर्थिक मोर्चो पर कड़ा संघर्ष व सुधारवादी और कारोबारियों में आशा का संचार करने वाली नीति बनानी होगी। कारोबारियों में विश्वास जगाना होगा।

विराट सांस्कृतिक परंपरा के धनी हमारे देश के युवाओं ने सारी दुनिया में अपनी पहचान बनाई है। अमेरिका सहित दुनिया के बहुत से देश हमारे युवाओं के ज्ञान कौशल से घबराने लगे हैं। गाहे-बेगाहे वे हमारे देश के युवाओं के उनके देश में प्रवेश को सीमित करने का प्रयास करते है। हमारे युवाओं की मेहनत, श्रम शक्ति और ज्ञान-कौशल का लोहा मानते हैं। हमारे वैज्ञानिकों ने अपनी मेहनत से देश को आगे ले जाने में कोई कमी नहीं छोड़ी है।

दूसरे देशों के सेटेलाइट हम प्रक्षेपित करने लगे हैं। इसे भी पढ़ें- सिर्फ जश्न के रंग में ही न डूबे, नये साल में भारत को दें नया रंग बदलते हालातों में कई ऐसे क्षेत्र है जो अपनी जगह बने हुए हैं। केन्द्र व राज्यों की बीच मधुर सामंजस्य व सहभागिता के संबंध दूर की कोड़ी ही दिखते हैं। इसी तरह से संसद व विधान सभाओं में विधायी कार्यों के प्रति अधिक सक्रियता की आवश्यकता अभी महसूस की जा रही है। देश के कई स्थानों पर संवैधानिक संस्थाओं को गंभीरता से नहीं लेने और संवैधानिक पदों के प्रति गंभीरता का अभाव भी अभी किसी चुनौती से कम नहीं हैं। दल बदल आज भी बड़ी समस्या है तो चुनावों में राजनीतिक वादें और मुफ्त में सुविधाएं देने की घोषणाएं लोकतंत्र का मजाक ही उड़ाती है। इसी तरह से लाख प्रयासों के बावजूद कम मतदान गंभीर समस्या है। राजनीतिक मर्यादा की क्षीणता भी अपने आप में गंभीर समस्या होती जा रही है। सबसे ज्यादा चिंता लाख प्रयासों के बावजूद महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों को रोकने में विफल रहना है तो बदलती जीवन शैली के कारण भी लाख समस्याएं उभरती जा रही है। डिप्रेशन का बढ़ता असर और युवाओं द्वारा आत्महत्या आखिर किस और ले जा रही है समाज को यह सोचना होगा। रात के बाद प्रात:कालीन सूर्य किरणों की आस की तरह नए साल के साथ एक उज्ज्वल पक्ष भी आता है। हम नए साल के साथ सोचने को मजबूर होते हैं गए साल की कमियों को दूर करने की, कुछ नया करने की। समाज में नया और अच्छा करने की। बुराइयों को दूर करने की। विकास की राह पर आगे तक ले जाने की। जो कुछ खोया है, उसे पाने की। सकारात्मक सोच से ही आगे बढ़ पाता है समाज और देश। यह हमारी संस्कृति की विशेषता रही है कि आशा की जोत हमेशा से जगाए रखती है। आशा की जोत के कारण ही हम नए साल का स्वागत के साथ आगाज करते हैं। कुछ अच्छे की सोचते हैं। जो हो गया है उसे भुलाने का प्रयास करते हैं।

नए साल का स्वागत।

# भारत के पास है आतंकवाद के स्रोत पर हमला करने का अधिकार:सेना प्रमुख

**नई दिल्ली/ब्यूरो**

पाकिस्तान को कड़ा संदेश देते हुए सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवाने ने मंगलवार को कहा कि अगर पड़ोसी देश राज्य प्रायोजित आतंकवाद को नहीं रोकता है तो इस स्थिति में भारत के पास आतंक के स्रोत पर हमला करने का अधिकार है । सेना प्रमुख का कार्यभार संभालने के बाद पीटीआई को खास साक्षात्कार में नरवाने ने कहा कि हमने प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ दृढ़ संकल्पित दंडात्मक जवाब की रणनीति बनायी है । उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी सेना की राज्य प्रायोजित आतंकवाद से ध्यान हटाने की सारी कोशिशें नाकाम हो गयी हैं और अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद कश्मीर में हालात सुधरे हैं ।

सेना प्रमुख ने कहा कि आतंकवादियों के सफाए और आतंकी नेटवर्क की तबाही के कारण पाकिस्तानी सेना के छद्म युद्ध की मंशा को झटका लगा है । पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के मुद्दे से वह कैसे निपटेंगे, इस बारे में उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के उकसावे या उसके द्वारा प्रायोजित आतंकवाद के किसी भी कृत्य का जवाब देने के लिए हमारे पास कई सारे विकल्प हैं। चीन के साथ लगी 3500 किलोमीटर की सीमा पर सुरक्षा चुनौतियों के बारे में पूछे जाने पर जनरल नरवाने ने कहा कि हमने प्राथमिकताओं को फिर से संतुलित करने के तहत पश्चिमी सीमा से उत्तरी सीमा पर ध्यान केंद्रित किया है। हम उत्तरी सीमा के पास क्षमता निर्माण में सुधार करना जारी रखेंगे ताकि जरूरत पड़ने पर हम तैयार रहें । चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की नियुक्ति का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि हम समूचे सैन्य तंत्र में जो महत्वपूर्ण सुधार लाना चाहते हैं, सीडीएस निस्संदेह उन बदलावों की राह तैयार करेंगे ।

सेना प्रमुख ने कहा कि उनका मुख्य ध्यान किसी भी क्षण किसी भी खतरे से निपटने के लिए सेना को तैयार रखना होगा। उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर पर सुधार से दक्षता और संचालन तैयारी में सुधार होगा।

# करनइन्दर सिंह ढिल्लों जिला योजना कमेटी बरनाला के चेयरमैन नियुक्त

**चंडीगढ़/ब्यूरो**

नौजवान नेता करनइन्दर सिंह ढिल्लों को ज़िला योजना कमेटी बरनाला का चेयरमैन नियुक्त किया गया है। इस सम्बन्धी पंजाब सरकार के योजनाबंदी विभाग द्वारा बाकायदा नोटिफिकेशन जारी कर दी गई है। यह जानकारी सरकारी प्रवक्ता द्वारा दी गई।

करनइन्दर सिंह ढिल्लों जो यूथ कांग्रेस के सचिव रहे हैं, लोकसभा हलका संगरूर और बरनाला शहर की कई नौजवान संस्थाओं के साथ जुड़े हुए हैं। वह पूर्व विधायक केवल सिंह ढिल्लों के पुत्र हैं। इस नियुक्ति पर करनइन्दर सिंह ढिल्लों ने मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह का धन्यवाद करते हुए कहा कि वह इस ज़िम्मेदारी को तनदेही और ईमानदारी के साथ निभाएंगे। उन्होंने कहा कि इस नियुक्ति से मुख्यमंत्री जी की रा%्य के नौजवानों को आगे लाने की नीति पर भी मोहर लगी है और वह विश्वास दिलाते हैं कि वह पंजाब सरकार की नीतियों और योजनाओं को बरनाला जिले में लागू करने में पूरी ताकत लगाएंगे।

# सरकार नागरिकता संशोधन कानून के ख़िलाफ़ विद्यार्थियों के पहली जनवरी को राज्य में शांतमयी विरोध की देगी आज्ञा परन्तु हिंसा बर्दाश्त नहीं की जायेगी-कैप्टन अमरिन्दर सिंह

**चंडीगढ़/ब्यूरो**

पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने मंगलवार को कहा कि उनकी सरकार नागरिकता संशोधन कानून (सी.ए.ए.) और केंद्र सरकार की अन्य विवादित कार्यवाहियों के ख़िलाफ़ विद्यार्थियों को रोष प्रदर्शन करने से नहीं रोकेगी परन्तु किसी भी कीमत पर रा%्य की शांति भंग करने की आज्ञा नहीं देगी।

नागरिकता संशोधन कानून, राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एन.आर.सी.) और राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एन.पी.आर.) के विरुद्ध वाम समर्थकी विद्यार्थी यूनियनों द्वारा 1 जनवरी को प्रस्तावित राज्य स्तरीय प्रदर्शन का ज़िक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि रोष प्रदर्शन करना भारत के हर नागरिक और विद्यार्थियों का लोकतांत्रिक अधिकार है और विद्यार्थियों को केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए सख्त कदमों के विरुद्ध शांतमयी ढंग से धरना या मार्च आदि करने का अधिकार है।

कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने कहा कि यहाँ तक कि उनकी सरकार भी केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार के इस अलगाववादी और पक्षपाती स्वभाव वाले नागरिकता संशोधन कानून और राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर का पूरी तरह विरोध करती है। लुधियाना में सोमवार को पंजाब कांग्रेस द्वारा लगाए गए नागरिकता संशोधन कानून विरोधी धरने के दौरान उन्होंने रा%्य में इस विवादित कानून को किसी भी स्थिति में लागू न करने के अपनी सरकार के फ़ैसले को दोहराया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार की इन कार्यवाहियों के ख़िलाफ़ विद्यार्थियों को खुल कर सामने आने से रोकने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब तक प्रदर्शनकारी कानून को अपने हाथ में नहीं लेते, पुलिस उनको अपने प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन करने से नहीं रोकेगी।

हालाँकि, मुख्यमंत्री ने चेतावनी दी कि योजनाबद्ध विरोध प्रदर्शन के

दौरान किसी भी तरह की हिंसा या सरकारी जायदाद को नुकसान पहुँचाने की कार्यवाही को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। उन्होंने कहा कि पुलिस को प्रदर्शनकारियों द्वारा सरकारी जायदाद की तोड़-फोड़ करने या किसी रोष प्रदर्शन के दौरान किसी हिंसक गतिविधि के ख़िलाफ़ सख्ती से निपटने की हिदायत की गई है।

कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने विद्यार्थी नेताओं को भी अपील की कि वह शांतमयी ढंग से प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन करें और प्रदर्शनकारियों में असामाजिक तत्वों की संभावित घुसपैठ को रोकना यकीनी बनाएं। बताने योग्य है कि ऐसी घुसपैठों के कारण कुछ अन्य रा%्यों में शांतमयी प्रदर्शन हिंसा में तबदील हो गई थी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पुलिस दिन भर यूनिवर्सिटी कैम्पस के आस-पास और राज्य के अन्य संवेदनशील क्षेत्रों और सार्वजनिक स्थानों पर सख्त नज़र रखेगी।

# नए साल पर रेल यात्रियों को झटका, एक्सप्रेस/मेल ट्रेनों के किराए में बढ़ोत्तरी

**नई दिल्ली/ब्यूरो**

साल 2019 के समाप्त होने में कुछ घंटे का वक्त शेष है और नव वर्ष के आगमन के इंतजार में सभी लोग हैं। लेकिन नया साल होने से पहले भारतीय रेल ने लोगों को एक बड़ा झटका दिया है। रेलवे ने यात्री किराया शुल्क में बढ़ोतरी की है। नया रेल किराया 1 जनवरी से लागू होगा। रेलवे ने मेल और एक्सप्रेस ट्रेन के लिए 2 पैसे प्रति किलोमीटर और एसी ट्रेन के किराए में 4 पैसे प्रति किमी की बढ़ोतरी की है। बढ़ी हुई दरें शताब्दी और राजधानी ट्रेनों पर भी लागू होंगी। यानि एक हज़ार किलोमीटर की यात्रा पर रेल टिकट पर अब 40 रुपए +जीएसटी अधिक देना होगा।

# बलबीर सिंह सिद्धू द्वारा साल 2020 का कैलेंडर जारी

## सरबत सेहत बीमा योजना के अंतर्गत 101 करोड़ रुपए की लागत के साथ 1 लाख से ज़्यादा लोगों को इलाज सेवाएं मुहैया करवाई-स्वास्थ्य मंत्री

**चंडीगढ़/एस.ए.एस. नगर (मोहाली)/नीरज**

स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री, पंजाब स. बलबीर सिंह सिद्धू द्वारा वर्ष 2020 का कैलेंडर जारी किया गया। इस दौरान सचिव स्वास्थ्य कम मिशन डायरैक्टर नैशनल हैल्थ मिशन और पंजाब श्री कुमार राहुल, एमडी-पीएचएससी स. मनवेश सिंह सिद्धू विशेष तौर पर मौजूद रहे।

इस दौरान स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री, पंजाब स. बलबीर सिंह सिद्धू ने बताया कि इस कैलेंडर में प्रमुख स्वास्थ्य दिवसों, सप्ताह, पखवाड़ा व माह का उल्लेख किया गया है। स्वास्थ्य विभाग, पंजाब द्वारा पहली बार ऐसा कैलेंडर जारी किया गया है।

इसमें पंजाब में मनाए जाने वाले 64 स्वास्थ्य दिवसों, 4 स्वास्थ्य सप्ताह, 2 स्वास्थ्य पखवाड़े, 3 स्वास्थ्य माह के साथ-साथ पंजाब सरकार की छुट्टियों के बारे में अवगत करवाया गया है। इसका उद्देश्य पंजाब की सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थाओं में स्वास्थ्य दिवसों, पखवाड़ों व महीनों के बारे में लोगों को जागरूक करना है तांकि लोग जागरूक रहकर ही अपने स्वास्थ्य की संभाल कर सकें।

स. बलबीर सिंह सिद्धू ने बताया कि यह कैलेंडर पंजाब के सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थाओं में प्रकाशित किया जाएगा और पंजाब के सभी डिप्टी कमिश्नर और ज़िले के अन्य विभागों के मुखियों को भी उपलब्ध करवाया जाएगा। उन्होंने स्वास्थ्य अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन दिवसों को मनाना यकीनी बनाएं और इस अवसर पर खासकर जागरूक

गतिविधियां करवाई जाएं।

इस अवसर पर स. बलबीर सिंह सिद्धू ने स्वास्थ्य विभाग, पंजाब की कारगुज़ारी का रिव्यू किया। उन्होंने बताया कि पंजाब में आयुष्मान भारत सरबत सेहत बीमा योजना के तहत करीब 40 लाख लोगों को ई-कार्ड जारी किए जा चुके हैं और कुल 1 लाख रुपए से भी ज़्यादा लोग इस योजना का लाभ उठा चुके हैं। इनके इलाज पर 101 करोड़ रुपए से भी ज़्यादा का खर्च किया जा चुका है।

इस दौरान स. बलबीर सिंह सिद्धू ने बताया कि पंजाब के सरकारी अस्पतालों में मुफ्त दवाइयां, मुफ्त इलाज व ज़रूरी टैस्ट मुफ्त किए जा रहे हैं। अब समय की मांग को देखते हुए और लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सरकारी अस्पतालों में उच्च स्तरीय टैस्टों की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जा रही है। इसके तहत पीपीपी मॉडल के आधार पर ज़िला अस्पताल में सिटी स्कैन, एमआरआई, कैथ लैब के अलावा अन्य एडवांस टैस्ट उपलब्ध करवाए जाएंगे।

स. बलबीर सिंह सिद्धू ने पंजाब में बढ़ती ठंड के मद्देनज़र अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि सभी सरकारी अस्पतालों में ठंड से बचने के इंतजाम किए जाएं और संवेदनशील वॉर्डों में हीट ट्रीटमैंट का प्रबंध किया जाए और खास तौर पर मां व बच्चे के स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाए।

इतना ही नहीं मां-बच्चे की संभाल के लिए स्वास्थ्य विभाग, पंजाब द्वारा जारी स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीज़र (एसओपी) की पालना करना यकीनी बनाया जाए।

उन्होंने कहा कि अपने अस्पताल में एसएमओ द्वारा रोज़ाना विज़िट यकीनी बनाई जाए और जहां पर भी कमी पाई जाती है, उसको तुरंत दुरुस्त किया जाए। इसके साथ-साथ सरकार द्वारा उपलब्ध दवाइयों व अन्य सुविधाओं की कोई कमी नहीं रहनी चाहिए।

इस अवसर पर डायरैक्टर फैमिली वैल्फेयर डॉ. रीटा भारद्वाज, डायरैक्टर पीएचएससी डॉ. मीनी हरदीप, डायरैक्टर (प्रोक्योरमैंट) पीएचएससी डॉ. राजेश शर्मा, ओएसडी टू हैल्थ मिनीस्टर डॉ. बलविंदर सिंह, स्टेट हैल्थ एजेंसी के एसीईओ डॉ. श्वेता, डायरैक्टर (वित्त) नैशनल हैल्थ मिशन, पंजाब श्री नीरज सिंगला, प्रोग्राम अफ़सर आईईसी/बीसीसी श्री शिविंदर सिंह सहदेव व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।